

सुविधा

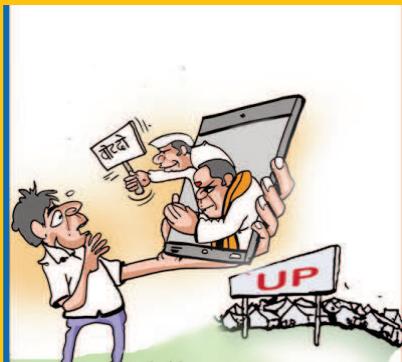
संपादकीय

ਮहामारੀ ਔਰ ਪਢਾਈ

हमने सामान्य हालात की ओर एक कदम और बढ़ा दिया है। सोमवार को देश के बहुत से प्रदेशों में स्कूल-कॉलेज खुल गए, उनके परिसरों में पुरानी रीनक लौट आईं। कंधों पर बसते लादे रखने जाते थे-थोड़े बच्चों को देखना हमेशा ही सुखद होता है। कई राज्यों में सोमवार से ही यह दृश्य भी दिखाई देना शुरू हो गया और कुछ राज्यों में इसके लिए अगले सोमवार का इनजार करना होगा। देश के ज्यादातर प्रदेशों में कक्षा नी से ऊपर की सभी कक्षाओं की पढ़ाई सोमवार से शुरू हो गई है, जबकि एकाध राज्य में इसका उल्टा तरीका अपनाया गया है। वहाँ थोड़े बच्चों के स्कूल पहले खोले गए हैं। यह अच्छी बात है कि देश के तकरीबन सभी राज्य एवं साथ महामारी के दौर में शिक्षा-व्यवस्था को सामान्य बनाने में जुट गए हैं। इस समय जब नए संकरितों की दैनिक संख्या और संकरण की दर, दोनों नीचे आ रहे हैं, तब इस तरह का फैसला स्वाभाविक ही था। महामारी के खतरों को देखते हुए स्कूलों को खोला जाए या नहीं, इसे लेकर प्रियों दो साल में पूरी दुनिया में खासी सामान्य-पर्याप्ती हुई है। अमेरिका वर्षग्रन्थ में तो महामारी की पहली लहर के बाद ही स्कूल खोले जाने की कोशिशें शुरू हो गई थीं। लेकिन तब परिणाम अच्छे नहीं रहे थे। तभी यह खतरा भी समझ में आया था कि कोरोना वायरस भले बच्चों को शिकार नहीं बनाता, लेकिन कुछ बच्चे अगर इस वायरस को लेकर घर पहुंचते हैं, तो वायरसों और बुरुओं को इससे खतरा हो सकता है। इस दो साल में पूरी दुनिया ने स्कूलों के गेट बंद कर औनलाइन शिक्षा की सेभानाएं और सीमाएं भी समझ ली हैं। यह भी समझ में आ गया है कि इस माध्यम से बच्चों को शिक्षित तो किया जा सकता है, लेकिन उनका पूरा मानसिक विकास नहीं हो सकता। औनलाइन शिक्षा संसी-साथियों का विकल्प नहीं हो सकता। स्कूलों में जब बच्चे एक-दूसरे से मिलते हैं, तो वे सामाजिक संबंधों का कठकरही भी सीखते हैं। इस समय जब बड़ी संख्या में लोगों का वैक्सीनेशन हो गुप्ता है और देश की सभी वैक्सीनेशनों का सामान्य रूप से चलाई जाने लगी हैं; बाजार लुल गए हैं और यहाँ तक कि चुनाव भी हो रहे हैं, तब यह अच्छी तरह समझ में आ युका है कि पूर्ण बढ़ी से नक्सान भले हो जाए कार्डिं बहत बड़ा फायदा नहीं

मिलता। ऐसे में, सिर्फ क्षिण्णन स्थानों को बद रखने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। पिछले कुछ समय में जिस भी गतिविधि को समान्य किया गया है, सभी में यह आग्रह रहा है कि पूरी सावधानी बरती जाए। मारक, सोशल डिस्ट्रेंसिंग और सेनेटाइजेशन को हर जगह अपनाया जाए। लेकिन सच यह है कि ज्यादातर जगहों पर लोग इसका पालन नहीं कर रहे हैं। अगर प्रयास किए जाएं, तो इसकी शुरुआत हमारे स्कूल ज्यादा अच्छी तरह से कर सकते हैं। स्कूलों को महमारी से लड़ने की पाठशाला बनाया जाए, तो इसका असर पूरे समाज पर दिख सकता है। पूरे दृश्य में रक्षण वय बच्चों का वैरसीन भी लगानी लायी है। यह काम स्कूलों में उसी तरह से किया जा सकता है, जैसे कभी हैंजे और बेचक के मामले में किया जाता था। यह कई जरूरी है कि महमारी से लड़ाई को छोटे बच्चों के पाद्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए। फिलहाल तो इतिहास विषय में भी इन्हें बारे में नहीं पढ़ाया जाता।

आज के कार्टन



ਜੀਵਨ ਕੇ ਸਾ

जग्मी वासुदेव

अभी हाल ही में, एक महिला मुझे बता रही थी कि कैसे वह कुछ खास ऊर्जा को इस्तेस कर पाती है और कैसे अलग अलग लोग, विभिन्न प्रकार के रूप और कई खास स्थान आप पर प्रभाव डालते हैं। आपने प्राण-प्रतिष्ठा करने के लिए सबसे अच्छी समझी तो मनुष्य ही है व्योगी। इस धरती पर जीवन के जितने भी रूप हैं, उन सब में वही सर्वधिक विकसित है। मनुष्य ही सबसे ज्यादा असानी से प्राण-प्रतिष्ठित किया जा सकता है, लेकिन मनुष्यों के साथ समस्या यह है कि हर कुछ मिनटों में वे यू-टर्ट ले लेते हैं। आप उन्हें अभी प्राण-प्रतिष्ठित कर सकते हैं पर कल सुख वे कैसे होंगे, ये हमें नहीं मालूम। तो सबसे बड़ा मुद्दा खास तौर पर आज की दुनिया में ये है कि जो उन्हें आज दिया जा रहा है, क्या वे उसके साथ पूरी तरह से प्रतिबद्ध होंगे? इसी कारण हम अन्य रूपों को प्राण-प्रतिष्ठित करते हैं। आज, आधुनिक विज्ञान अब भी भौतिक वस्तुओं का ही अध्ययन कर रहा है। आप में जो भी भौतिक है, हम सब बाहर से इकट्ठा किया गया है। आप जो "माया शरीर" कहते हैं वह हम इस धरती का बस एक टुकड़ा है। आप ने इकठ्ठा से भोजन से एक विनियत किया है, जो आप खाते आए हैं। आप में जो भी भौतिक है, उसे बस आपने बाहर से इकट्ठा किया है तो फिर वह आप तो नहीं हो सकते। आप क्या हैं? निश्चित रूप से भौतिकता से परे भी कोई आयाम है। आप अगर उसे अनदेखा करेंगे, तो काई जीवन ही नहीं होगा। लेकिन अभी तो परिस्थिति ये है कि मानवीय तरक बुद्धि, जो अपने आप को वैज्ञानिक मनानी है, अभी उस स्तर पर है, जहां वह ये निकर्ष निकालती है कि जो उपकरणों से मापा न जा सके, उसका अस्तित्व ही नहीं है। इस तरह देखें तो अभी आप सबका कोई अस्तित्व नहीं है व्योगी। आप को मापा नहीं जा सकता। किसी बाध्यता के अरण मुझे एक ऐसे संश्लान में जाना पड़ा। उन्होंने मेरे शरीर में 14 इलेक्ट्रोइस लगाया और पर किया, "आप ध्यान कीजिए।" मैं मैने तर दिया, "मैं नहीं जानता, ध्यान करें कि क्या है?" वे चौंके और बोले, "आप तो सब को ध्यान करना सिखाते हैं।" मैंने कहा, "मैं ऐसा इस्तेवा करता हूँ व्योगी के लिए स्थिति बैठा नहीं जानता।" उनकी समस्या यह थी कि वे बस एक नाम और एक प्रक्रिया वाहते थे, जिसके परिणाम को वे नाप सकें।

अज्ञानता और विचार हीनता मानवता के विनाश के दो सबसे बड़े कारण हैं - जॉन टिलोटसन

अनोखी आकृतियों से गहराया ब्रह्मांड का रहस्य

मुकुल व्यास

हमारा ब्रह्मांड विचित्रताओं और रहस्यों से भरपूर है। इसके बारे में बहुत-सी वीजे अभी तक ज्ञात हैं। खगोल वैज्ञानिक निरंतर इन रहस्यों से पर्दा उठाने की कोशिश करते रहते हैं। इस क्रम में उन्होंने कुछ ऐसी अनोखी संरचनाओं का पता लगाया है, जिनके बारे में पहले नहीं सुना गया था। इन संरचनाओं में हजारों प्रकाश-वर्ष दूर तक फैली पट्टी, पटाखों की लिडिंगों जैसी आकृतियां और प्रबंद्ध कर्ज़ा छोड़ वाले पिंड शामिल हैं। खगोल वैज्ञानिकों ने हाल ही में पृथ्वी से 55000 प्रकाश-वर्ष दूर एक हाइड्रोजन की लंबी पट्टी खोजी है। उनका कहना है कि यह विशाल पट्टी 3900 प्रकाश-वर्ष लंबी और 130 प्रकाश-वर्ष लंबी वीड़ी है। यह करीब 13 अरब वर्ष पहले बनी थी। जर्मनी के मैक्स प्लाक एस्ट्रोनॉमी इंस्टिट्यूट के खगोल वैज्ञानिकों के नेतृत्व में एक अंतर्राष्ट्रीय दल ने यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के गाइया उपग्रह की मदद से इस संरचना की नाप-जोख़ी की है। इस अध्ययन के एक सह-लेखक जुआन सोलेर को एक वर्ष पहले इस संरचना के अनित्यत के कुछ संकेत मिल गए थे। उन्होंने अपने देश कालिविया की सबसे लंबी नदी के नाम पर इस संरचना का नाम देंगी रखा। आंकड़ों के प्रारंभिक विश्लेषण में मैगी को पहचानना संभव हो गया था लेकिन वर्षमान अध्ययन से ही यह साबित किया गया एक लंबी पट्टी है। बिंग बैंग अथवा ब्रह्मांडीय महाविस्प्रेट के करीब 3800000 वर्ष बाद हाइड्रोजन का निर्माण हुआ था। मिल्की-वे का गठन उससे एक अंतर बाल पहले हुआ था। हाइड्रोजन ब्रह्मांड में सबसे ज्यादा पाया जाने वाला पदार्थ है। लेकिन इस गैस को डिवर्टेक्ट करना बहुत ही दुर्कर कार्य है। इस सर्वांगे में हाइड्रोजन की लंबी पट्टी की खोज बहुत ही रोमांचक है। इस अध्ययन के प्रथम लेखक जोनास सेयर ने कहा कि पट्टी की लोकेशन से इस खोज में मदद मिली। हाँ अभी यह नहीं जानते कि ये पट्टी वहाँ कैसे बनी लेकिन यह मिल्की-वे के समतल करीब 1600 प्रकाश-वर्ष तक फैली हुई है। इसकी जगह से हाइड्रोजेन से होने वाले विकिरण को प्रृथक्षीमि में आसानी से देखा जा सकता है। इससे पट्टी को देखना संभव हो जाता है। मैगी

का गहराई से विश्लेषण करने के बाद वैज्ञानिकों ने पाया कि पट्टी में कुछ बिंदुओं पर गैस आकर मिलती है। ये संभवतः वे क्षेत्र हैं जहां गैस जमा होकर बड़े बादों में तब्दील होती है। शोधकर्ताओं का ख्याल है कि ऐसे क्षेत्रों में आणविक गैस मालिंगयूल के रूप में परिवर्तित होती है। नया अद्यतन एस्ट्रो-नॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। मिल्की-वे में हाइड्रोजन की पट्टी को खोजने में गाइया उपग्रह का बहुत बड़ा योगदान है। यह उपग्रह इस समय मिल्की-वे आकाशगंगा का नियंत्रिता नवीकरण तयार कर रहा है। अपने मिशन के दौरान उसने इसकी संरचना, गठन और विकास के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी हैं। इस उपग्रह को दिसंबर, 2013 में भेजा गया था। तब यह पृथ्वी की कक्षा से करीब 16 लाख किलोमीटर की दूरी पर सूरज की परिक्रमा कर रहा है। अपनी यात्रा के दौरान वह मिल्की-वे की तस्वीरें खींच रहा है और छोटी आकाशगंगाओं तथा तारों की पहचान कर रहा है जिन्हें कापी समय पहले हमारी आकाशगंगा द्वारा निगल लिया गया था। गाइया के मिशन द्वारा इन तारों पिंडों का पता चलने की उम्मीद है जो अभी तक खोजे नहीं गए हैं। इनमें निकटवर्ती तारों के द्वई-गिर्द घूमने वाले उपग्रह, पृथ्वी के लिए खतरा बनने वाले क्षुद्रउपग्रह और सुपरनोवा विस्फ्रेट शामिल हैं। इस मिशन से भौतिक-खगोलविदी व अंतरिक्ष में डार्क मैटर (अदृश्य पदार्थ) के वितरण के बारे में न जानकारियाँ मिलने की उम्मीद है। समझा जाता है कि यह पदार्थ ब्रह्मांड को जोड़े हुए है। ब्रह्मांड से आने वाली रेडियो तरंगों व निगरानी करने वाल खगोल वैज्ञानिकों के एक दूरसंचालक के एसे रहस्यमय पिंड का पता चलता है जो प्रचंड ऊर्जा उत्तरित कर रहा है। ऐसी कोई वीज पहले कभी नहीं देखी गई थी।

प्रिकर्ते हुए पिंड का पता मार्च, 2018 में चाला था लेकिन इसका पुष्टि आकड़ों के विस्तृत विश्लेषण के बाद हाल ही में हुई है। पृथ्वी से करीब 4000 प्रकाश वर्ष दूर रित्थ इस पिंड से हर 18 मिनट में तीव्र विकिरण निकल रहा था। उन क्षणों में यह 'ब्रह्मांडी प्रकाश स्तरं' की तरह रेडियो तरंगों का सबसे घरमकदर रसोबन गया था, जिसे पर्थी से भी देखा जा सकता था। खगोल

गुलामी के प्रतीकों से लगाव की दूषित मानसिकता ।

(लेखक- डॉ राघवेंद्र शर्मा)

भारत में विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों पर ढोए जाने वाले गुलामी के प्रतीक विन्होंने को देश के प्रधानमंत्री नन्देंद्र मोदी की सरकार द्वारा तेजी से बदला जा रहा है। इससे गुलाम मानसिकता और भारत के बाहर स्थित अथवा राष्ट्रीय में अपनी निषाएँ रखने वाले दलों व उनके नेताओं में बैठेनी का माहौल है। हाल ही में देश की राजधानी दिल्ली में गणतंत्र दिवस मनाया गया तो उसके समाप्त समारोह पर होने वाली बीटिंग रिट्रीट में से एक ऐसे गीत को हटा दिया गया, जिसका भारतीय संस्कृति, ख्यालभिन्न अथवा संप्रभुता से किसी भी प्रकार का संरोक्तार नहीं था। उसे ब्रिटिश सूत के एक कवि द्वारा रचा गया था और वह केवल और केवल ब्रिटानी साम्राज्य को ही समर्पित था तथा उससे गुलामी मानसिकता की बू आती थी। उसके रथन पर एक ऐसा गीत ‘ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आख में भर लो पानी’ जोड़ा गया जो हमारी सेना के जवानों को समर्पित है। इस परिवर्तन को लेकर देशभर से जो बवाइया और शुभकामनाएँ संदेश आ रहे हैं, उन्हें देख सुनकर यह संतुष्टि प्राप्त होती है कि आरंधिकों ने इस परिवर्तन को मुक्त करं ते से सरहा है और उसे हृदय से ग्रहण किया है। लेकिन यह जानकर आश्वर्य हुआ कि राष्ट्रीय विजयों के हित में किया गया यह परिवर्तन चंद राजनीतिक दलों, उनके नेताओं और उंगलियों पर गिर जानकर केवल बुरा ही नहीं लगा, मन व्यथित भी हुआ और अत्मर्मन में यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि देश के एक खास बांग, बुनिदा राजनीतिक दलों और तथाकथित प्रुद्ध जनों को वह सब वयों भाटा है, जिसे स्पर्श करने मात्र से दासता अथवा गुलाम मानसिकता के जीवंत बने रहने का एहसास पैदा होता है। कौन हैं यह लोग? जो राष्ट्रीय ख्यालभिन्न, संस्कार और संस्कृति को मानने वालों को हमेशा दक्षिणांसी, सांप्रदायिक और संकुचित मानसिकता का अध्ययन करते हैं। यह खुद को वामपंथी माने या फिर कुछ और, इसमें किसी को क्या एतरज छो सकता है? लेकिन इन्हें यह अधिकार किसने दिया कि जिनके विचारों से इनकी भारत के बाहर स्थित निषाएँ मेल नहीं खाना, यह उन्हें दक्षिणांसी, सांप्रदायिक और दक्षिणांसी शब्दों से पुकारना शुरू कर दें? सही बात तो यह है कि भारतीय संस्कृति में दक्षिणांसी जैसी विचारधारा कोई थी वही नहीं थी जिसका भारतीय संस्कृत में रहता था। किंतु हां, दो विचारधाराएँ यहां बाहर अर्से से देखने को मिल रही हैं। इसमें से एक है रेवरदावा वाद, जिसमें वामपंथी विचारधारा भी निहित है। इनका भारतीय संस्कृत और उसके गौरवाली इतिहास से कोई लेना देना नहीं है। भारतीय शब्दबाली में इसे धर्मनिरपेक्षता वाद कहा गया है। धर्म निरपेक्ष यानी कि जो धर्म से ही निरपेक्ष है, उस के पक्ष में कर्तव्य नहीं। दुर्सी वह विचारधारा, जिसे इन्हीं के जैसे इतिहासकारों और तथाकथित प्रुद्ध जनों ने राष्ट्रदावा का नाम दे रखा है। यह वह विचारधारा है जिसमें राष्ट्रीयता, अपनी संस्कृति और संस्कारों से प्रेम निहित है। इसमें धर्म युक्त आचरण अपेक्षित है और धर्म को सही मायने में दायित्व माना गया है। उदाहरण के लिए— पुरु का पालन पोषण पिता का धर्म, माता पिता की संवा पुत्र का धर्म, नागरिकों का हित करना राष्ट्र धर्म और राष्ट्र की रक्षा करना नागरिक का धर्म माना गया है। इनके लिए कहा जाने वाला दक्षिणांसी अथवा राष्ट्रवादी शब्द सर्वथा गतल है। भारत का किया भी वाह से कोई लेना-देना रहा ही नहीं। पश्चिमी इतिहासों का अध्ययन करने के बाद सभ यह पाते हैं कि ‘वाद’ का प्रादुर्भाव पश्चिमी मूल के ‘इज्म’ शब्द से हुआ है। यदि पश्चिमी इतिहासकारों द्वारा रवित साहित्यी की बात करें तो उसमें ‘इज्म’ अथवा ‘वाद’ एक प्रक्रिया को कहा गया है, जो अपना अधिवर्षण अथवा मत बलात् स्थिरता करने का गिर दूसरों पर थोपने हेतु बलात्वार्क अपनाई गई। इस दृष्टि से देखा जाता तो विटेडी और खासकर पश्चिमी

सभ्यता से प्रभावित वामपर्याधी, धर्मनिरपेक्षता वादियों द्वारा दिए गए राष्ट्रवाद की जैसे शब्दों को सही नहीं ठहराया जा सकता। क्योंकि वाद अथवा इज्म हमारे संस्कार में कभी रहा ही नहीं। यदि अपवाद ख्वरुप देश के किसी राजा, बादशाह या फिर सामर्थ ने इसे बलात् थोड़ेने के कुत्सित प्रयास किए भी, तो हमारे ही स्थानीय वीर योद्धाओं और विचारकों ने उन्हें सफल नहीं हाने दिया। इनमें महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी और चंद्रबादाइ जैसे महामानवों के नाम लिए आज सकते हैं। हमारे ऐसे अनेक पूर्वजों और हम देश प्रेमी राष्ट्रीयता के विवर से हमें आत्मप्रतास रखते हैं। हमारे देश में पहले राजसाही नहीं हो आधा वर्तमान में लोकसाही, यहाँ के किसी भी सासाक ने दूसरे राष्ट्रों के प्रति कभी भी ऐसा कोई कृदृष्टि किया ही नहीं, जिससे वाद या फिर इज्म की तोहमत हम पर लगती हो। कहने का आशय यह कि सेव्यूलर वादियों और वामपर्याधी द्वारा थोड़े गर जिस राष्ट्रवाद शब्द का उल्लेख हम स्वयं भी अवकर अपने राष्ट्र प्रेम से युक्त व्यवहार को लेकर अपने लिए करते रहते हैं, वह शब्द हमारी संस्कृति, संस्कारों और व्यवहार के अनुकूल नहीं। क्योंकि हम राष्ट्रवादी हैं ही नहीं, या तो हम राष्ट्रीय हैं अथवा फिर राष्ट्रप्रेमी। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग हमें दक्षिणपंथी अथवा दक्षिणसूरी कहते हैं, वे वास्तव में वामपंथी और सेव्यूलर वादी ही हैं। इनमें से कुछ वे लोग हैं जो सेव्यूलरवाद अथवा धर्मनिरपेक्षता वाद की आड़ में तुर्धीकरण की फूट डालो राज करो वाली नीति अपारते रहते हैं। दूसरे वाले लोग हैं जिन्हें भारत और भारतीयता से कोई लेना-देना नहीं। इनकी निष्ठा भारत के बाहर स्थित है। इनके लिए देश का भारत माता ना हांकर केवल एक जमीन का टुकड़ा है, जहां रहकर यह लोप अपनी राजनीति हितों की पूर्ति में लगे रहते हैं। अपना उल्लंघनीय करने में जुटे इन विचारधाराओं के पोषक लोगों का नारा बहुजन सुखाय ही सकता है। लेकिन जो राष्ट्र प्रेमी हैं और देश को मातृभूमि के रूप में पूजते हैं, उन्होंने हमें सर्वजन सुखाय की नीति का पालन करने में ही सतीष की अनुमति पाई है।

સુ-દોકુ નવતાળ -2041

	1	6		4			7	
	4	5	8					3
		8		9	6	1		
8	3			5	4	2	6	7
	5	9		3		8	1	
4	6	7	2	1			5	9
	2	1	8		4			
1					5		9	
	9			2		5	8	

प्र० ३

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक को पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

बायें से दायें:-

- संगी, रजनीकांत, श्रीदेवी की फिल्म- 4
 - किरणकुमार, राजा सत्यजा की 'दिल का नजराना ले ओ' गीत वाली फिल्म- 3
 - 'आजा रे अब मेरे दिल उपकारा' गीत वाली राज कपूर, नर्सिंह की फिल्म- 2
 - जयेंद्रकुमार, श्रीमला की 'खड़ी है रेस्टेन कम्पनी संग रहने' गीत वाली फिल्म- 3
 - करण दीवान, स्वर्णाली की सुपरहिट फिल्म- 3
 - युरुदत, बहीरा की फिल्म- 2
 - फिल्म 'जीत' में सलमान का नाम- 2
 - अजय, सोनाली की 'तुम आए तो आया मुझे याद' गीत वाली फिल्म- 2
 - 'कुंभ मेरा दिल' गीत वाली करणनाथ, मनोज, ननान्या सिंह की फिल्म- 2
 - सनी देओल, सुष्मिता की 'मैं अपना नाम भूला' गीत वाली फिल्म- 2
 - चिकेक, रितेश, लाला, अमृतालंब की फिल्म- 2
 - 'दिल जंगली कबूल' गीत वाली फिल्म- 3
 - सचिन खेडेकर, तब्दु, सिद्धि की अडिलबद फिल्म- 2
 - 'फूलों से खुशबू, आए' गीत वाली प्रसांत, ऐश्वर्या की फिल्म- 3
 - अक्षयकुमार, रुहीना की 'क्या अबत राहमा गिया जा' गीत वाली फिल्म- 2
 - जयकुमार, शशि, साधना की फिल्म- 2
 - 'प्रभाती हो तो है' गीत वाली फिल्म- 3
 - 'दिल मेरे ना और इंतजार कर' गीत वाली शाहिद, करोना की फिल्म- 2
 - फिल्म 'सोंदे बसंती' के सांगीतकार कोंथ- 2
 - 'दिल है छोड़ा सा छोड़ी सी आया' गीत वाली फिल्म- 2
 - अर्पित, उदय, जॉन, ईशा, रिमो सेन की फिल्म- 2
 - नंदीर, शाह

फिल्म वर्ग पहेली- 204

1		2			3		4		5
				6					
7	8			9		10		11	
			12			13			
14		15			16			17	
18			19				20		
		21			22				
23			24	25			26		27
		28				29			
30					31			32	

四六

- | 16. | सनी देओल, सुमित्रा की 'मैं अगर मान भूल' गीत वाली फिल्म-2 | इंगा, रियो सेन की फिल्म-2 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|--|---------------------------|----|------|------|------|------|----|------|---|------|----|---|---|-----|----|--|--|--|---|---|---|---|----|---|--|--|--|-----|----|----|----|---|---|---|---|--|--|----|---|---|----|---|----|--|--|----|----|---|---|----|------|--|--|--|---|---|---|---|----|----|----|--|--|---|----|----|---|---|----|---|----|--|----|----|----|---|----|----|---|---|--|----|----|---|---|---|---|--|--|--|--|
| 18. | अजय, आकाशवाला, | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | फिल्म वर्ग पर्देली-2040 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | <table border="1" style="display: inline-table; vertical-align: middle;"> <thead> <tr> <th>मु</th><th>सा</th><th>फि</th><th>र</th><th>प्या</th><th>र</th><th>ही</th><th>प्या</th><th>र</th></tr> </thead> <tbody> <tr> <td>स्कि</td><td>जा</td><td>ब</td><td>म</td><td>फता</td><td>सी</td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>प</td><td>ज</td><td>ह</td><td>ट</td><td>शा</td><td>ब</td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>प्र</td><td>ति</td><td>झा</td><td>बू</td><td>म</td><td>उ</td><td>म</td><td>र</td><td></td></tr> <tr> <td></td><td>ता</td><td>स</td><td>ट</td><td>फू</td><td>ल</td><td>सि</td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>सा</td><td>खो</td><td>फ</td><td>व</td><td>झा</td><td>म्हा</td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>व</td><td>क</td><td>र</td><td>म</td><td>हा</td><td>वा</td><td>ता</td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>व</td><td>दी</td><td>वो</td><td>क</td><td>ट</td><td>ती</td><td>ल</td><td>की</td><td></td></tr> <tr> <td>भा</td><td>या</td><td>वा</td><td>न</td><td>जी</td><td>ती</td><td>ल</td><td>म</td><td></td></tr> <tr> <td>दी</td><td>वा</td><td>स</td><td>प</td><td>त</td><td>भ</td><td></td><td></td><td></td></tr> </tbody> </table> | मु | सा | फि | र | प्या | र | ही | प्या | र | स्कि | जा | ब | म | फता | सी | | | | प | ज | ह | ट | शा | ब | | | | प्र | ति | झा | बू | म | उ | म | र | | | ता | स | ट | फू | ल | सि | | | सा | खो | फ | व | झा | म्हा | | | | व | क | र | म | हा | वा | ता | | | व | दी | वो | क | ट | ती | ल | की | | भा | या | वा | न | जी | ती | ल | म | | दी | वा | स | प | त | भ | | | | |
| मु | सा | फि | र | प्या | र | ही | प्या | र | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| स्कि | जा | ब | म | फता | सी | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| प | ज | ह | ट | शा | ब | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| प्र | ति | झा | बू | म | उ | म | र | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | ता | स | ट | फू | ल | सि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| सा | खो | फ | व | झा | म्हा | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| व | क | र | म | हा | वा | ता | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| व | दी | वो | क | ट | ती | ल | की | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| भा | या | वा | न | जी | ती | ल | म | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| दी | वा | स | प | त | भ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

